भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–14, अंक–8 सोमवार, 26 अग.' 91	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी अगस्त, 1991	वार्षिक चन्दा–10.00 प्रति अंक : 1.00

ब्रह्मप्रवाह

आठ ठिकाने पर भगवान की स्मृति नहीं रहती–

- ☐ देह में रोग आये तब,
- ☐ कामादिक दोष की प्रवृत्ति हो तब,
- ☐ अधिकार मिले तब,
- ☐ अधिक धनदौलत मिले तब,
- ☐ रूपवान स्त्रियाँ मिलें तब,
- ☐ प्रतिष्ठा (मान) खंडित हो तब,
- ☐ हजारों मानें, पूजे–ऐसा ऐश्वर्य-प्रताप आये तब और
- ☐ शिष्यों के पास।

इसलिए सच्चे साधु का ऐसा सेवन कर लेना–जिससे कि हर संजोगों में वह इन आठों चक्रव्यूह से हमारी रक्षा करे.....

- ▭ आश्रित की–अन्त समय पर रक्षा करे व उसका आत्यंतिक कल्याण करे
- ▭ निष्ठावान की–काल, कर्म, माया से रक्षा करे। ऐसा भक्त संकल्प सिद्ध है।
- ▭ निर्दोषबुद्धि वाले की–उसे अभाव, अवगुण, विक्षेप में फँसने न दे व मूर्ति भूलने न दे।
- ▭ एकांतिक की–मान, ऐश्वर्य, प्रताप, शिष्यों व अपने आदर्श में बंधे न रहने दे।

प.पू. काकाजी महाराज

प. पू. पप्पाजी की गोद में.....

धन्यवाद ! धन्यवाद ! गुरुहरि योगीजी महाराज की करुणा को.....जिन्होंने दिव्य कल्याण योजना सम्बन्ध में आये सब जीवों के लिए खुले मैदान में रख दी....ना देखी हमारी गरज....ना देखी निष्ठा.... ना देखी श्रद्धा.....ना ही काबलियत....केवल पूर्व का सम्बन्ध देख कर हमारे लोक व परलोक की जिम्मेदारी सामने से लेकर हमारी चेतना को विकास की राह पर प्रेरित किया और इससे भी अधिक स्वयं जैसे ही गुणातीत स्वरूपों हमें बक्षिश में दे दिये.....इन्हीं गुणातीत स्वरूपों की विरासत में एक अत्यन्त धीर-गम्भीर, शांत-प्रशांत श्वेत कपड़ों में हमेशा माहात्म्य व दिव्यता का दर्शन कराती हुई हम सभी के बीच विद्यमान दिव्य विभूति प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन Ist Sep....जो कि इस बार समग्र गुणातीतसमाज 'अमृत महोत्सव' (75वीं जन्म जयंती) के रूप में दि. 9 और 10 नवम्बर को विधानगर में एकत्रित होकर मनायेगा।

कभी-कभी प्रश्न उठता है कि क्या अक्षरधाम में जगह नहीं थी जो गुणातीतस्वरूपों धरती पर पधारे? परन्तु तुरन्त ही हृदय से आवाज आती है....नहीं....नहीं.....भक्तवत्सल भगवान तो पशु में से मानव.....मानव में से महामानव और महामानव में से 'भक्त' बनाकर जीवों को सुखी करने की एकमात्र वासना से धरती पर पधारे ! पाण्डवों के स्वभाव कैसे थे? पर फिर भी करुणानिधि भगवान श्रीकृष्ण का सारा जीवन मानों पाँच पाण्डवों के लिये ही व्यतीत हुआ....ऐसा हम सभी ने 'महाभारत' में देखा।

प.पू. पप्पाजी जैसे युगपुरुषों के बारे में वाणी से वर्णन नहीं किया जा सकता....मन से विचार करके कल्पना नहीं की जा सकती व कलम से लिख कर उनकी अद्‌भुत प्रतिभा को सीमित नहीं किया जा सकता। हाँ, भक्ति अदा करने व श्रद्धा के फूल समर्पित करने का अधिकार तो हमें है....तो आईये ! उनके गुणगान गाकर महिमा की सुवास फैलायें व अपनी भक्ति श्रद्धा के फूल उन्हें अर्पित करें.....

ऐसी दिव्य विभूतियाँ धरती पर आकर अत्यन्त सामान्य जीवन जीती हैं....उनका खाना-पीना, सोना, हँसना, बोलना, चलना हरेक क्रिया हमारे जैसी ही होती है। पर भूल जाते हैं कि हम हरेक क्रिया स्वयं की बुद्धि की गिरफ्त (Clutches) में रहकर करते हैं और उनकी सब क्रिया प्रभुप्रेरित.....और हमारे मायिक मूल्यांकनों के कारण हम तो कभी उन्हें पहचान भी नहीं पाते। फिर भी वह करुणा करके हमारी कक्षा पर आ जाते हैं ताकि हमें उनमें प्रीति हो जाये और हम उन्हें नजदीक से निहार कर उनके गुणों के दर्शन कर पायें ! अभी का एक प्रसंग निहारें–

1990 Feb. में प.पू. पप्पाजी दिल्ली पधारे थे। एक भक्त को कुछ हृदय की तकलीफ थी....पू. पप्पाजी उस भक्त को अपने साथ किसी हरिभक्त के यहाँ पधरामनी पर चलने पूछ रहे थे, इतने में साथ के मुक्तों में से कोई बोला कि पप्पाजी इसे Heart की तकलीफ है और जिसके यहाँ जाना है उसका घर 4th Floor पर है। प.पू. पप्पाजी एकदम सहज बोल उठे कि **मैं इसे अपने कन्धों पर बिठाकर ले जाऊँगा**.....बस वह मूर्ति उस भक्त के दिल में बस गई कि जो विभूति मेरी शारीरिक जिम्मेदारी इतनी ले रही है तो वह आत्मा की तो लेगी ही.....

सन् 1948 में गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. पप्पाजी को मीठी बेढमी खिलाई और घब्बा मारा.....और मानो करिश्मा हुआ.....उसी क्षण से प.पू. पप्पाजी की विलक्षण बुद्धि ने दृढ़ ठहराव कर दिया कि गुरुहरि योगीजी महाराज कोई सामान्य साधु नहीं, बल्कि मानव-स्वरूप में विचरण करता

हुआ प्रत्यक्ष भगवान का स्वरूप है और.....उसी दिन से बुद्धि बंद कर दी.....बस **गुरुहरि योगीजी महाराज के वचन से प्रवृत्ति और उनके ही वचन से निवृत्ति**.....

जीवन का यह ध्येय निश्चित करने के बाद देह, लोक, भोग, पक्ष को चूर-चूर करके धाम, धामी व मुक्त ही परम सत्य है और उनके लिये ही जीवन जीना—वही पराभक्ति है.....सच्चा समर्पण है..... इसकी शुरुआत भी उन्होंने स्वयं से ही की।

एक बार प.पू. पप्पाजी व प.पू. काकाजी के जीजाजी श्री रावजीभाई इन्दौर से बम्बई आ रहे थे। उनका पहले से कागज आया था कि मुझे लेने गाड़ी स्टेशन पर भेजना। परन्तु प.पू. पप्पाजी ने बहुत स्पष्ट शब्दों में कह दिया : **'यह गाड़ी गुरुहरि योगीजी महाराज की है सो यह बापा और उनके हरिभक्तों के लिये ही दौड़नी चाहिये.....अगर जीजाजी को आना हो तो टैक्सी करके आ जायेंगे।** इस प्रकार देह व देह के सम्बन्धी मिथ्या एवं भगवान व भगवान के भक्तों ही सत्य थे इनके लिये। अल्प सम्बन्ध वालों की भी इन्हें खूब महिमा.....एक बार प.पू. पप्पाजी बोले थे कि अगर कोई भक्त मुझे अपनी झूठी थाली धोने के लिये दे, तो मैं उसे सामने से दस रुपये भेंट दूँ....कैसी माहात्म्य भरी दृष्टि ! प.पू. पप्पाजी, प.पू. काकाजी, पू. कांतिकाका की त्रिपुटी ने अपना पूरा जीवन सम्बन्ध वालों के लिये मिटा दिया। अफ्रीका से हरिभक्तों आये हो तो उनके लिये गाड़ी दे दें और स्वयं अपने काम के लिये टैक्सी या बस में जायें.....इसे हम किस कक्षा का समर्पण कहेंगे? 'समर्पण' की परिभाषा भी फीकी पड़ जाये.....धन सौंपा, मन सौंपा व देह भी सौंप दिया.....त्रिलोक की कोई चीज प्यारी नहीं रखी तो स्वयं प्रभु के प्यारे बन गये। भयंकर विपरीत परिस्थितियों में भी निश्चिंत हँसता ही मुख !

पू. काकाजी की एग्रो ओरियन्ट इण्डस्ट्रीज खूब loss में जा रही थी....धन, कीर्ति सभी कुछ डूब रहा था। 25 लाख का क्रिमीनल केस चल रहा था। पू. पप्पाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज से पूछा 'बापा ! हम तो आपके हैं.....हमारा जो कुछ है वह आपका है, आपके सिवा और कोई वस्तु में हमें राग नहीं; तो यह 'एग्री' का यूँ हो जाने का हेतु क्या? गुरु हरि योगीजी महाराज तो एक ही वाक्य बोले **'कईयों का बहुत कुछ निकालना है।'** पू. पप्पाजी बापा के एक ही वाक्य में भविष्य समझ गये। कभी इस बारे में दुबारा पूछा नहीं—चर्चा ही नहीं करी। **'बापा मेरे हैं और मैं बापा का, दास के दुश्मन हरि कदि न होय'**—यह तो जीव में दृढ़ ही था। फिर पूछा बापा ! मुझे क्या करना? तब बापा सहज अवस्था में ही एकदम बोले कि **हाथ हिलाते हुए जाना व हाथ हिलाते हुए वापस आना। अगर वकील रखना ही पड़ता हो, तो पचास रुपये वाला वकील रखना**.....25 लाख का क्रिमीनल केस व पचास रुपये का वकील ! इस बात का विचार करें तो? या तो कोई पागल या तो कोई अखंड प्रभु रखे हुए भगवत्स्वरूप संत ही इतनी सहजता से बोल सकता है। पर हर असहनीय कसौटी में दोनों भाईयों ने अटूट विश्वास रखा, कर्ता-हर्ता केवल योगीजी को दिल से माना.....प्रभु का ही बल लिया। धन्य-धन्य है गुरुहरि योगीजी महाराज को व धधकती भट्ठी में तपकर निकले हुए इन निखालिस Pure सोने जैसे वारिसदारों को.....गुरु शिष्य के अनुपम सम्बन्ध को !

पिछले साल 4th May 1990 को प.पू. पप्पाजी की धर्मपत्नी जो अपने गुणातीत समाज में पू. 'मम्मीबा' के नाम से पहचाने जाते थे.....उन्होंने शरीर छोड़ा। प.पू. पप्पाजी को जब यह समाचार इंगलैंड में मिला तो एकदम सहज ही बोल उठे

'अब तक गृहस्थ था पर अब साधक हो गया !' हम सबके लिए कैसा आदर्श ?

आज हम स्वयं अपनी दृष्टि से निहारें....74 साल की आयु में वह सतत् विचरण कर रहे हैं, अथक् परिश्रम कर रहे हैं.....सम्बन्ध में आई व्यक्ति की जगत की ओर बहती वृत्तियों के प्रवाह को बदल कर प्रभु सन्मुख कर रहे हैं। उनकी एक ही निष्काम भावना है सब सुखी हों। उनके परिश्रम के फलस्वरूप आज आत्मीयता व निर्दोषबुद्धि से जीने वाले देश-विदेश में संतों, व्रतधारी बहनों, व्रतधारी युवकों व गृहस्थों के एक दिव्य समाज का हमें दर्शन हो रहा है।

तो, इस मंगलकारी दिन पर हम याचना करें.....हे पप्पाजी ! आपने केवल कृपा करके हमें ग्रहण करे, पर यह भव्य प्राप्ति हम किसी भी कारण गंवायें नहीं। किसी की झंझट, दोष, स्वभाव, अभाव, भाव-फेर में पड़े बिना बस अखंड मूर्ति के आनन्द में रहा करें। आपका जो हमारे लिए संकल्प है– अक्षरधाम की भूमिका में रहते करने का–वह तो साकार होगा ही, पर उस संकल्प को जल्दी से जल्दी पूरा करने में हम हर प्रकार से साथ दें, सम्बन्ध वालों की महिमा का जैसा आदर्श आपने रखा है, वैसे ही हरेक को जीवन मुक्त मान कर उसकी दिव्यभाव से सेवा करके गुणातीत पुरुषों को राजी कर लें–इसके लिये आप हमें अमाप बल, पवित्र बुद्धियोग दोगे न?

□ □ □

रक्षाबन्धन.....

'रक्षाबन्धन' का परम पवित्र त्यौहार आ रहा है।

जीवमात्र को 'सच्ची रक्षा' व 'निःस्वार्थ प्रीति' की भूख है,

जिसकी तृप्ति (पूर्ति)

केवल प्रभु प्रगटाये निर्मल संत द्वारा ही संभव है।

हमें तो प्रभु ने समर्थ सारथी की गोद दी है,....इतिहास साक्षी है कि

अर्जुन, मीरा, प्रह्लाद

प्रभु के सम्बन्ध से निर्भय–निश्चिंत थे,

फिर हमें तो प्रगट प्रभु मिले..... !

तो अगर हम भी इनकी.....

- □ आज्ञा पालेंगे
- □ आपस में सुहृदभाव बढ़ायेंगे
- □ नियमित भजन करेंगे
- □ स्वभाव छोड़ने का प्रयत्न करेंगे
- □ मुझे मिले 'संत' ही कर्ता-हर्ता, सर्वोपरि, साकार, प्रगट व दिव्य हैं–

ऐसी दृढ़ निष्ठा रखकर

गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता पाने की सुरुचि रखेंगे तो,

प्रभु हमारी हर प्रकार 'अखंड रक्षा' करेंगे ही करेंगे।

हम सभी 'अखंड रक्षा' के अधिकारी (पात्र) बनें इसी पवित्र भावना के साथ 'राखी' का त्यौहार सदैव मनाते रहें.....

□ □ □

स्वामी की बातें

185. हमें तो भगवान ने राजी होकर स्वयं का अक्षरधाम बक्षिश दिया है। भगवान ऐसे उदार हैं कि जिसके ऊपर राजी होते हैं उसे स्वयं का धाम बक्षिश दे देते हैं और सत्संग तो बाद में दस हजार गुणा बढ़ेगा पर यह साधु और ये बातें नहीं मिलेगी। महाराज प्रगट हुए तब यह साधु दिखाई पड़ा, वर्ना तो यह साधु (भगवान के हजुर के सिवा) और कहीं पर हो ही नहीं सकते। प्र-4,52

186. ....ऐसी बातें तो दिल अपने आप ढल जाये मानो जैसे गाय अपने बछड़े को देखकर स्वयं ही दूध छोड़ देती है, तब हो सकती हैं। नहीं तो हो ही नहीं सकती और ये बातें दोबारा जन्म नहीं होने दे ऐसी हैं। प्र-4, 53

187. पांडव भगवान के प्रताप से, जैसे समुद्र को गाय के पांव की छाप की भाँति आसानी से लांघना आसान होता है, वैसे दुःख से तर गये। इसलिए हमें तो काम-क्रोध जीतना—वह अति कठिन है क्योंकि—वे तो तीमंगल व दुर्योधन की सेना से भी अधिक बलवान है; परन्तु भगवान की आज्ञा में रहने से पार हो जायेगा। सो भगवान के प्रताप का बल रखना चाहिए.... प्र-4, 54

188. .....देह होगी तो दोष तो होंगे ही, पर भगवान अन्दर (जीव में) बैठे हैं, तो शरीर भले छूट जाये परन्तु भगवान अन्दर से निकलें वैसे नहीं हैं। प्र-4, 55

189. ....'मुक्त' हो उसे विषय जंचेंगे नहीं। अक्षरधाम में भगवान हैं व यहाँ जो आए हैं वही वहाँ पर हैं। परन्तु इस भगवान में और अक्षरधाम में जो हैं उसमें तनिक भी फर्क नहीं है—यूँ समझना वही माया को तैरना है। प्र-4, 57

190. अक्षरधाम और अक्षर के मुक्तों सहित भगवान यहाँ (धरती पर) आए हैं और भगवान को कुछ चाहिए नहीं। दान, चंदा, वगैरा जो लेते हैं वे तो वे हमारी सेवा स्वीकार करते है। त्यागी व गृहस्थों दोनों के कल्याण के लिए यह रीत चलाई है। गृहस्थाश्रम है, सो व्यवहार तो चलाना पड़े, पर उसका भजन (चिंतन) नहीं करना। सब कुछ पाया था, पर भगवान नहीं पाये थे। उन्हें भी पा लिए.....अब कुछ पाना शेष नहीं रहा; सभी कुछ पा लिया। प्र-4, 58

□ □ □

जन्म कर्म च मे दिव्यं—

एक बार गुरुहरि योगीजी महाराज ने सुबह जल्दी उठकर युवकों को समझाते हुए कहाः—

'.....धर्म-नियम पालना व बचपना नहीं रखना और 'मैं ब्रह्मस्वरूप हूँ'—यूं मानकर आत्मारूप वर्तना। अंग्रेजी और हिन्दी में प्रश्न उत्तर करना। वचनामृत जबानी कंठस्थ करना जिससे ज्ञान भी दृढ़ हो और जहाँ-जहाँ जाओ वहाँ युवक मंडल की स्थापना करना। कभी भी खाली नहीं रहना—यह मुख्य काम है।

मुझे शास्त्रीजी महाराज 'जोगी' कहकर बुलाते तो कदम मस्ती आ जाती कि अहो हो ! मुझे शास्त्री महाराज ने बुलाया ! आज पैंतीस साल के बाद भी उनके 'जोगी' बुलाने पर की मेरी मस्ती उतरी नहीं है....अगर मैं उस समय खाना खा रहा होता तो

मुंह का कौर छोड़कर दौड़ता व अगर कागज लिख रहा होता तो पैन वहीं रखकर उनके पास पहुँच जाता। **तो तुम्हें भी अनादि पुरुष मिल गये हैं,** सो ऐसी ही सतर्कता रखकर प्रसन्नता पा लेना.....।'

फिर दुबारा बोले–'आलस-प्रमाद जरा भी नहीं रखना और सेवा का जो लाभ मिला है वह पूरा उठा लेना। हो जाएगा–कर लेंगे–इस प्रकार ढील छोड़ने से आलस प्रमाद रह जाता है.....

गुरुहरि योगीजी महाराज को अपने गुरु शास्त्री जी महाराज के प्रति कैसी अद्‌भुत प्रीति होगी....कैसी निगाह व कैसी महिमा होगी जो सिर्फ 'जोगी' सुनने में मस्ती आ जाती होगी। गुरुहरि योगीजी महाराज ने बातों बातों में गहरा रहस्य भी कह दिया कि तुम्हें भी अनादि पुरुष मिल गये हैं। हम तब भी न समझें तो वह हमारी ही कसर..... !

स्पष्ट शब्दों में अगर कहें तो–हमें साधु की महिमा ही नहीं है। अगर महिमा हो तो अहोभाव से सेवा हो ही पाये। प.पू. काकाजी महाराज कई बार कहते थे कि कोई यदि तुम्हें कहे कि यहाँ रात को इतना 'सोना' मिलेगा तो हम पूरी रात–अरे कई रातें नहीं सोयेंगे। फिर उंगलियों से बताते थे कि तुम्हारे जीवन में मन, देह, व्यवहार, रिश्तेदार, क्रिया आदि का स्थान प्रथम है और आखिरी उंगली पर प्रभु का !

सो ही हम भगवान रखे साधु की महिमा समझकर प्राप्ति की मस्ती में नहीं रहते और उसे पहचान नहीं पाते.....

❑ ❑ ❑

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	1.9.91	रविवार	ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज की 75वीं जन्म जयंती
2.	दि.	2.9.91	सोमवार	जन्माष्टमी, निर्जला व्रत
3.	दि.	5.9.91	गुरुवार	एकादशी, व्रत
4.	दि.	12.9.91	गुरुवार	गणेश चतुर्थी
5.	दि.	17.9.91	मंगलवार	श्री हरि जयती, नौमी
6.	दि.	19.9.91	गुरुवार	जलझीलनी एकादशी, निर्जला व्रत
7.	दि.	23.9.91	सोमवार	पूर्णिमा
8.	दि.	24.9.91	मंगलवार	श्राद्ध प्रारम्भ

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at **R.P. Printers,** Shahadra, Delhi-110032